Date ______
Page ______

Function of money

types

(1) Static Function → मुद्रा के परंपरागत कार्यों को स्थैतिक कार्य कहते है। ये स्थायी प्रकृति के कार्य है जो अर्थव्यवस्था को संचालित करते है।

→ (i) Primary F. → ये कार्य सर्वप्रथम प्राथमिक होते है व जिनका वर्णात्मक परिभाषा में वर्णन है जो स्थायी मुद्रा को व्यक्त करते है।

→ (a) medium of exchange → वस्तु-विनिमय के दोषों को दूर करने हेतु मुद्रा विनिमय का माध्यम आया। इससे माल व सेवाओ को मुद्रा मे व्यक्त किया जा सकता है।

→ (b) measure of value → मुद्रा वस्तु व सेवाओ का मूल्य मापने का सामान्य मापदण्ड का कार्य करती है।

→ (ii) Secondary F. → ये भी स्थायी प्रकृति के किन्तु द्वितीयक कार्य होते हैं जो मुद्रा में व्यक्त करते है।

→ (a) Store of value → मुद्रा माध्यम से धन संचय व पूंजी निर्माण संभव हुआ है व संग्रहित धन का कुछ भाग भविष्य मे प्रयोग किया जा सकता है।

→ (b) Transfer of value → मुद्रा माध्यम से किसी भी वस्तु या संपति के मूल्य की गणना कर उसे आसानी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित किया जा सकता है।

→ (c) Deferred Payment → मुद्रा माध्यम से सौदो का शीघ्र भुगतान न करके उसे भविष्य हेतु

स्थगित किया जा सकता है। इसमें Credit व Cash Transactions भी होते है।

② **Dynamic Function →** मुद्रा अर्थव्यवस्था का ऐसा तत्व है जो आर्थिक गतिविधियों को सक्रिय रूप से प्रभावित करता है। मुद्रा का ये गतिमान कार्य आर्थिक विकास को दिशा प्रदान करता है। मुद्रा की गतिशीलता के कारण कुछ कार्य स्वतः उत्पन्न होते है जो अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करते है, ये कार्य मुद्रा के प्रावैगिक कार्य होते है।

→ ⓘ **Other F. →**

→ ⓐ **Basis of Credit →** वर्तमान आर्थिक तंत्र को उधार तंत्र की संज्ञा दी जा सकती है। बैंको के माध्यम से साख निर्माण मुद्रा संभव है। निकट मुद्रा के रूप मे चैक, प्रतिज्ञा-पत्र, विनिमय-बिल, साख-पत्र आदि है।

→ ⓑ **Distribution of Income →** वर्ष मे उत्पादित ~~सकल~~ वस्तुओं व सेवाओं का बाजार मूल्य सकल राष्ट्रीय उत्पाद अर्थात (राष्ट्रीय आय) कहलाता है। इसी आय का विभिन्न पक्षों को वितरण मुद्रा के माध्यम से ही संभव है। उत्पादन, मूल्य ह्रास, व्यय योग्य आय आदि राष्ट्रीय आय से संबंधित सभी तत्वों का विश्लेषण, आय का वितरण मुद्रा के माध्यम से संभव है।

→ ⓒ **marginal utility →** सीमांत उपयोगिता, एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई के उपयोग से प्राप्त उपयोगिता सीमांत उपयोगिता कहलाती है। कुल उपयोगिता का अंतर $MU_n = TU_n - TU_{n-1}$ है। इसे मुद्रा के माध्यम से समझा जा सकता है। 'UMIS' मे मापा जाता है।

कोई भी वस्तु मुद्रा कहलाने लगी। दैनिक जीवन मे प्रयुक्त कोई भी वस्तु जो मुद्रा का कार्य संपन्न करती हो, वो वस्तु मुद्रा कहलाती है।

प्रतिनिधित्व

- प्रतीकी मुद्रा सस्ती धातुओं व पत्र नोटों की तरह हैं। इस मुद्रा का स्वाभाविक मूल्य इसके अंकित मूल्य से कम होता है। भारत मे रुपया व नोट (सिक्के) प्रतिनिधित्व मुद्रा की तरह है। प्रतिनिधि मुद्रा को पूर्ण निकाय धन मे परिवर्तित किया जा सकता है।

(3) money & near money (मुद्रा व निकट मुद्रा) → चैम्बर्स

मुद्रा मे केवल धातु-मुद्रा व पत्र मुद्रा, को शामिल करते है। क्योंकि वे कानूनी होते है। व उनमे सर्वमान्यता का गुण होता है। इसमे 100% तरलता है।

निकट मुद्रा में साख-पत्रों का चलन भी होता है, जिसका प्रयोग विनिमय माध्यम के रूप में किया जाता है, इनमें सर्वमान्यता का अभाव होता है, क्योंकि इनके माध्यम से कोई व्यक्ति भुगतान स्वीकार कर ले इसके लिए वे कानूनी बाध्य नहीं है, इसलिए वे मुद्रा नहीं लेकिन निकट मुद्रा है। जैसे - साख-पत्र, परिसंपत्तियाँ जिन्हें बेचकर नकद मे परिवर्तित कर सकते है, इसलिए ये मुद्रा के निकट है। जैसे - राष्ट्रीय बचत जमा, समाज जमा करना, सरकारी प्रतिभूति, ट्रेजरी बिल्स, जहन-पत्र, बाँड्स, विनिमय-पत्र, बैंकों मे सावधि जमाएं, कंपनी के अंश, ये निकट मुद्रा है।

(4) Metallic money & Paper m. (धातु व पत्र मुद्रा) →

धातु-मुद्रा के अंतर्गत कुछ वर्गीकरण है →

प्रामाणिक मुद्रा → जिसके स्वाभाविक मूल्य अंकित मूल्य के बराबर होता है ~~वे कुछ धातु व सिक्के बनाती~~ है। ये सिक्का

देश का प्रमुख सिक्का होता है। इसे पूर्णकाय व सर्वांग मुद्रा भी कहते है। ये सिक्के प्रायः सोने व चाँदी के ही बनाये जाते है। जो कानून के अनुसार एक निश्चित वजन व शुद्धता के होते है।

सांकेतिक सिक्के → इसका अंकित मूल्य स्वाभाविक मूल्य से ज्यादा होता है। सांकेतिक सिक्को की विशेषता प्रामाणिक सिक्को की विशेषता से बिल्कुल विपरीत होती है। ये सिक्के छोटे-2 सौदो के भुगतान के लिए प्रचलित होते है, व ये घटिया धातु - ताँबे या ~~कि~~ निकिल से बनते है।

- गौण-सिक्के

पत्र मुद्रा का वर्गीकरण →

(i) प्रतिनिधि पत्र मुद्रा → ये वो मुद्रा है जिसके पीछे रिजर्व मे ठीक उसके मूल्य के बराबर सोना या चाँदी रखा जाता है। इस प्रकार की मुद्रा तभी छापी जाती है, जब नोट प्रकाशन करने वाली संस्था के पास 100% रिजर्व स्वर्ण या रजत मे सिक्के हो। ऐसी पत्र-मुद्रा को ये मूल्य धातुओं मे कभी-भी बदला जा सकता है। ~~इस~~

(ii) परिवर्तनशील पत्र-मुद्रा → यदि प्रचलित पत्र-मुद्रा के बदले में नोट प्रकाशन करने वाली संस्था से या उसके किसी भी शाखा या ऑफिस से प्रमाणित ~~सिक्के~~ प्राप्त करने का अधिकार जनता को प्राप्त होता है, तब इस प्रकार की पत्र-मुद्रा को परिवर्तनशील पत्र-मुद्रा कहते है।

(iii) अपरिवर्तनशील पत्र-मुद्रा →
जब किसी देश में पत्र-मुद्रा को प्रकाशन के लिए ऐसी विधि अपनाई जाती है कि सरकार नोटों के बदले मे प्रामाणिक सिक्के या मूल्यवान धातु देने के